संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२५
वर्ष : ३४ अंक : १० (निरंतर अंक : ३८८)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

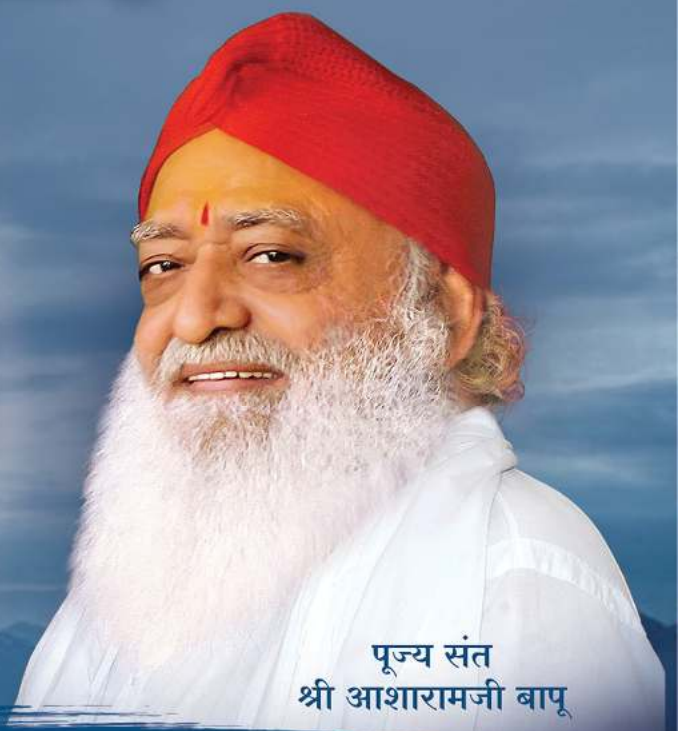

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

भगवान शिवजी महर्षि वसिष्ठजी से कहते हैं : "हे मुनीश्वर ! हमारे मत में तो देव और कोई नहीं, एक परमात्मदेव ही तीनों भुवनों में है । उसीका पूजन सार है और उसीसे सब फल प्राप्त होते हैं ।" **गीता कहती है :** ऐसे तत्त्ववेत्ता महापुरुष सुदुर्लभ एवं सभी प्राणियों के हित में रत होते हैं । (गीता : ७.१९, ५.२५)

पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस : १९ अप्रैल ११

अर्थात् **'विश्व सेवा-सत्संग दिवस'**

घर में शांति आने का अद्भुत चमत्कार होगा ३४

दरिद्रता दूर, रोजी-रोटी में बरकत भरपूर ३४

पूज्य बापूजी का पावन संदेश

जीवनयात्रा में उत्थान के ३ उपादान

जीवनयात्रा में उत्थान का पहला उपादान है सत् । तो निश्चय करें कि 'हे सच्चिदानंद ! जिसको मौत मार नहीं सकती उस तेरे सत्यस्वरूप की तरफ हम चलेंगे । हम मौत से न डरेंगे न दूसरों को डरायेंगे । सबका विकास करेंगे, चाहेंगे । सबका आधार तू ही है इसलिए सबकी सेवा, सबकी भलाई, सबकी प्रसन्नता तेरी पूजा का उत्तम सामान है, उत्तम रीति है, उत्तम कला है । सत् आत्मा है, हम हैं, हम अपनी ओर चलेंगे । असत् शरीर की ओर बहुत चले, असत् वाहवाही और निंदा की तरफ बहुत चले । असत् जन्म और मृत्यु की तरफ बहुत चले । अब अमर आत्मा की ओर चलेंगे ।' पैरों से नहीं चलना है, जहाजों से नहीं चलना है, विचार से चलना है, ज्ञान से चलना है, शांति से चलना है । चित्त में सुख पाते हुए चलना है, माधुर्य जगाते हुए चलना है, आनंद उछालते हुए चलना है, गुरु-प्रसाद को दुलार करते हुए चलना है ।

दूसरा उपादान है चेतनता । 'वह चेतन (परमात्मा) ज्ञानस्वरूप है तो हम भी अपना आत्मिक ज्ञान पायेंगे, बढ़ायेंगे । दूसरों के जीवन में भी ज्ञान का प्रसाद पहुँचे ऐसा यत्न करेंगे । हम ज्ञानसम्पन्न बनेंगे । दुनिया का ज्ञान, पेट भरने का ज्ञान तो बहुत हो गया । पेट पालने और परिवार को सँभालने का ज्ञान तो चिड़िया भी जानती है, हम अपने 'स्व' का ज्ञान पायेंगे । अपने-आपका ज्ञान पायेंगे, ईश्वर-तत्त्व का ज्ञान पायेंगे, ईश्वर-अनुभव का ज्ञान पायेंगे और दूसरों के लिए भी इसके द्वार खोलेंगे ।' इस प्रकार का दृढ़ संकल्प करके ज्ञानसम्पन्न बनें, दूसरों को भी ज्ञानी बनायें, योगी बनायें, महान बनायें ।

उत्थान का तीसरा उपादान है आनंद । हम अपने आनंदस्वभाव को जगाते चलें । पक्का करें कि 'अब हम जरा-जरा बात में दुःखी नहीं होंगे, किसीको दुःखी नहीं करेंगे । सुखी रहेंगे, सुख बाँटेंगे और दुःखों को पैरों तले कुचलेंगे । **सुखं मे भूयात्, दुःखं मे मा भूत् ।** मुझे सुख की प्राप्ति हो, मुझे दुःख न हो... सब यही चाहते हैं । हम सबके लिए यही करेंगे, सबके लिए सुख के द्वार खोलने का यत्न करेंगे ।'

ये तीनों उपादान आपकी जीवनयात्रा को सफल बना देंगे ।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३४ अंक : १० (निरंतर अंक : ३८८)
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२५
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी | चैत्र-वैशाख, वि.सं. २०८२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ **ये ६ बातें आपको चिरआदरणीय बना देंगी** ४
❖ **उपासना अमृत** ✻ तो तन, मन व मति को दिव्य गति देनेवाला हो जायेगा वैशाख मास ६
❖ **सत्य अन्वेषण** ✻ जनता इस दुष्प्रचार को भलीभाँति समझती है - अधिवक्ता श्री मुकुंद कोकरे ८
❖ **बहुचर्चित** ✻ स्वार्थपूर्ति हेतु हथकंडा बने इन कानूनों में हो संशोधन ! - श्री भगवानदीन साहू, सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार १०
❖ **संत अवतरण** ✻ जन्म-मरण के चक्कर में जाना है कि बापू के रास्ते ? ११
❖ **पुण्यदायी तिथियाँ व योग** १३
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ✻ गुरुदेव सिखाते कर्म में सजगता व कुशलता का पाठ- धवलेश्वर खुंटिआ १४
❖ **परिप्रश्नेन** ✻ पूज्य बापूजी के साथ प्रश्नोत्तरी १६
❖ **शास्त्र प्रसाद** ✻ भगवान श्रीरामजी का आदर्श जीवन १७
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✻ ध्यान से जगता है विवेक १८
✻ कर्मवीर - अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' १९
✻ वे माताएँ समझो अपने बच्चों को धीमा जहर दे रही हैं १९
❖ **तेजस्वी युवा** ✻ योग से शक्ति-संचय, भोग से विनाश ! - संत पथिकजी २०
❖ **संस्कृति विज्ञान** ✻ भारतीय संस्कृति के आधारभूत तथ्य २२
❖ **तत्त्व दर्शन** ✻ तुरीय तीनों अवस्थाओं से विलक्षण है - स्वामी अखंडानंदजी २३
❖ **शाकाहारी भोजन व योगाभ्यास की शक्ति** २४
❖ **संयम शिक्षा** ✻ विकारी आकर्षण से कैसे बचें ? २६
❖ **जीवन जीने की कला** ✻ गजकरणी की महत्ता व आवश्यकता २७
❖ **जयंती विशेष** ✻ सुसंस्कारों का सुपरिणाम २८
❖ **भक्तों के अनुभव** ✻ गुरु की अदृश्य छत्रछाया हर पल शिष्य के साथ २९
❖ **स्वास्थ्य समाचार**
✻ तपती गर्मी व लू, जलन, नकसीर आदि से राहत के उपाय ३०
✻ गर्मियों में बहुलाभकारी आम का पना ३१
❖ **दैवी चिकित्सा** ✻ बिना खर्च के रोग व पीड़ा को भगाओ, स्मृति को बढ़ाओ ३१
❖ **सेवा संजीवनी** ✻ ऋषि प्रसाद सेवा की अद्वितीय घटनाएँ एवं दिव्य संरक्षण- कालीदास परमार ३२
❖ **समसामयिक** ✻ गीता की शिक्षाएँ किसी धर्म-विशेष के लिए नहीं, मूल्यात्मक व नैतिक हैं : न्यायालय ३३
❖ **भेंटवार्ता** ✻ ऐसे महान संत के बारे में अपनी धारणा को बदलिये ३३
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ✻ दरिद्रता दूर, रोजी-रोटी में बरकत भरपूर ३४
✻ गाय, भैंस और संकरित पशु के दूध का तुलनात्मक प्रभाव ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी — Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

ये ६ बातें आपको चिरआदरणीय बना देंगी – पूज्य बापूजी

६ बातें आपके जीवन में आ जायें तो आपके कर्म और आप चिरआदरणीय हो जायेंगे । जो आदर की इच्छा रखता है उसका अनादर ही होता है लेकिन जो आदर योग्य कर्म करता है और आदर की इच्छा नहीं रखता वह चिरआदरणीय हो जाता है ।

शबरी ने किसीको नहीं कहा कि मेरा आदर करो, मीरा ने, संत तुलसीदासजी ने, संत रविदासजी ने, साँईं लीलाशाहजी प्रभु ने किसीको नहीं कहा कि मेरा आदर करो... आदर योग्य कर्म करते और आदर की इच्छा नहीं है । इच्छा क्यों नहीं है ? कि परमात्मा में विश्रांति पा ली ।

आदर तथा अनादर, वचन बुरे त्यों भले ।
निंदा स्तुति जगत की, धर जूते के तले ॥

ये तो हो-हो के मिटनेवाले हैं किंतु मेरा परमेश्वर अमिट है ।

६ बातें जीवन में आ जायें तो साधारण व्यक्ति भी महान हो जायेगा, आदरणीय हो जायेगा, भगवद्-तुल्य हो जायेगा क्योंकि भगवद्-तत्त्व का ज्ञान हृदय में प्रकट हो जायेगा न !

एक तो अपनी **योग्यता का सदुपयोग** करें । जो तत्पर होकर शास्त्रीय ढंग से विधिवत् कर्म करता है उसकी योग्यता का विकास होता है ।

दूसरी बात है **ईमानदारी** । बेईमानी, कपट, धोखाधड़ी निकाल दो । यह बिल्कुल नासमझी है कि धोखे के बिना काम नहीं चलता । बेईमान व्यक्तियों को लगता है कि बेईमानी के बिना काम नहीं चलता किंतु बेईमान व्यक्ति ठीक से समझ लें कि ईमानदार तो ईमानदार को चाहते हैं परंतु बेईमान भी हृदयपूर्वक ईमानदार को ही चाहते हैं । बेईमान सेठ भी ईमानदार मुनीम चाहता है, बेईमान पति भी ईमानदार पत्नी चाहता है, बेईमान पत्नी भी 'पति मेरे से ईमानदारी से चले' ऐसा चाहती है । तो आपके जीवन में ईमानदारी हो ।

तीसरी बात है **परिश्रम** । बौद्धिक परिश्रम, मानसिक परिश्रम, शारीरिक परिश्रम यथायोग्य करें, उसमें कोर-कसर न रखें, पूरा मन लगाकर करें । कोई भारी चीज उठानी है तो जैसे पूरा शारीरिक बल लगता है ऐसे ही जो भी करें उसमें मानसिक बल और बौद्धिक बल पूरा लगायें तो आपकी योग्यता में चार चाँद लग जायेंगे ।

योग्यता का सदुपयोग करें, ईमानदारी और परिश्रम पूर्वक कर्म करें और इसका जो फल हो वह बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय बाँट दें तो आप संसार में सबके प्रिय हो जायेंगे । मेरी जो योग्यता है वह क्या है ? जरा-सी तो पढ़ाई-लिखाई है किंतु जो भी योग्यता है वह दूसरों के हित में लगा दी तो देखो कैसा हो गया !

आपकी जो योग्यता है उसका फल अपनी तरफ खींचोगे तो आपकी योग्यता सीमित हो जायेगी । आपकी योग्यता के फल को बाँटते जाओगे तो वह असीम हो जायेगा । जैसे आपके पास मुट्ठीभर बीज हैं, अगर अपनी तरफ खींचे – खाये तो चट हो गये किंतु बो दिये तो कई गुना हुए, फिर बो दिये तो और कई गुना हुए, ऐसे ही आप अपनी योग्यता को बाँटते जाओ दूसरों के हित में तो वह बढ़ती जायेगी । धंधेवाला कमाई का पैसा फिर-फिर से धंधे में लगाता जाता है तो धंधा बढ़ते-बढ़ते वह बड़ी कम्पनी का मालिक हो जाता

तो तन, मन व मति को दिव्य गति देनेवाला हो जायेगा वैशाख मास

१२ अप्रैल से १२ मई तक वैशाख मास व्रत है । इसकी महत्ता और इससे जुड़े शास्त्र-प्रसंग का रसपान करते हैं पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से :

वैशाख मास की बहुत भारी महिमा है । पद्म पुराण में कथा आती है कि राजा महीरथ पूर्वजन्म के तप, दान आदि के पुण्यप्रभाव से सुंदर राज्य, छत्र-चँवर का अधिकारी बना । खुशामदखोरों और ललनाओं के बीच वह भूल ही गया कि मेरा आयुष्य नष्ट हो रहा है । धीरे-धीरे राजकाज मंत्रियों के हवाले हो गया और स्वयं सुंदरियों के हवाले हो गया । यहाँ तक कि राजकोष की सँभाल भी खुद नहीं कर पाता था और फौज पर निगरानी रखने का काम भी मंत्री के हवाले हो गया ।

उपासना अमृत

वैशाख मास व्रत : १२ अप्रैल से १२ मई

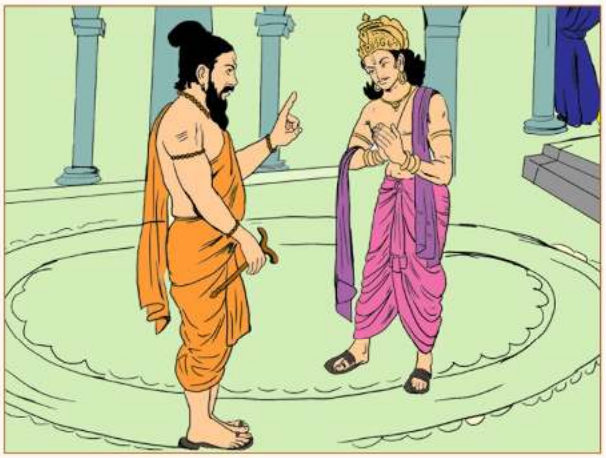

कश्यप ऋषि को दया आयी और राजा महीरथ को चेताया कि ''राजन् ! तुम क्या कर रहे हो ? पूर्वजन्म के पुण्यबल से तुम्हें राज्य मिला है । इन कामिनियों के बीच रह के तुम अपना पुण्य नष्ट कर रहे हो, अपने आयुष्य का भी नाश कर रहे हो । बेटे ! यह जीव संसार से अकेला जायेगा । तुम्हारे बड़े खतरे के दिन मँडरा रहे हैं । तुम्हारे कान की तरफ सफेद बाल आ गये हैं जो यह संदेश दे रहे हैं कि अब जाने की तैयारी करो । परलोक सँवारो । बंधु-बांधव साथ नहीं रहेंगे, मंत्री और राज्य साथ नहीं रहेगा, काठ व मिट्टी के ढेले के समान तुम्हारे शरीर को श्मशान में रख दिया जायेगा । तुम दिन-रात इन्द्रियों की लोलुपता में लगे हो । कामसुख क्षणिक सुख है जो बाद में ओज-तेज और बल का नाश करनेवाला है । तुम इन्द्रियसंयमरूपी साधन क्यों नहीं करते ? इन इन्द्रियोंरूपी घोड़ों को संयम की लगाम से बाँधकर साधना के सुमार्ग पर क्यों नहीं चलाते हो ?

हे महीरथ ! मेरे भोजन करने या पानी पीने से तुम्हारी भूख-प्यास नहीं मिटेगी । जैसे पानी तुम स्वयं पियोगे तो तुम्हारी प्यास मिटेगी ऐसे ही तुम स्वयं ही सत्कर्म व सत्संग करोगे तो तुम्हारे क्लेश और जन्म-मरण का जाल कटेगा और तुम परम पद को पा सकोगे ।

पुत्र ! कामी, अहंकारी, मूढ़चेता (मूढ़ बुद्धि वाले) राजाओं के अनुसरण का तुम त्याग करो । तुम्हारे पिता भी मेरी सत्संगति से पुण्यचेष्टा करते थे और तुम उनकी संतान हो । **मूढ़चेता लोग एक ही जन्म में ऐसे नीच कर्म कर लेते हैं कि करोड़ों जन्म तक दुःख भोगते हैं और सगुरे एक ही जन्म में ऐसे कर्म कर लेते हैं कि करोड़ों जन्म के बंधन कट जाते हैं और मुक्तात्मा परमात्मा को पा लेते हैं ।**

बुद्धिमान राजा अहंकार छोड़ सरल स्वभाव हो के एक ही जन्म में ऐसा सत्संग और साधन कर लेते हैं कि करोड़ों जन्म के संस्कार मिटा के

जनता इस दुष्प्रचार को भलीभाँति समझती है

– अधिवक्ता श्री मुकुंद कोकरे

इतिहास साक्षी है कि जिन-जिन समाजसेवियों ने देशहित व संस्कृति-रक्षा के लिए व्यापक स्तर पर कार्य किये, स्वार्थी तत्त्वों ने उनके खिलाफ दुष्प्रचार एवं षड्यंत्र करके उसमें अवरोध उत्पन्न करने का प्रयास किया । भारतीय संस्कृति के प्रबल प्रहरी तथा पिछले ६० वर्षों में लोक-जागृति द्वारा समाज में आमूल-चूल परिवर्तन करनेवाले संत श्री आशारामजी बापू एवं उनकी संस्था के साथ पिछले कुछ वर्षों से यही किया जा रहा है । अब तो जो आक्षेप पूर्व में जाँच एजेंसियों एवं न्याय-तंत्र द्वारा खारिज हो चुके हैं और जो मामले न्यायपालिका में विचाराधीन हैं उन्हींको फिर-फिर से उछालने के लिए डॉक्यूमेंट्री फिल्म, विडियोज आदि बनाये जा रहे हैं । इनमें आश्रम के बारे में अनेक झूठी, निराधार और कपोलकल्पित बातें कही जा रही हैं ।

इनमें उछाले गये मुद्दों में एक है जुलाई २००८ में संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद में पढ़नेवाले दो बच्चों की आकस्मिक अपमृत्यु को लेकर लगाये गये तांत्रिक विधि के आरोप । इस मामले में दिनांक ९-११-२०१२ को सर्वोच्च न्यायालय ने शव-परीक्षण (postmortem) रिपोर्ट, न्याय-सहायक विज्ञान प्रयोगशाला (forensic science laboratory) की रिपोर्ट तथा सी.आई.डी. (क्राइम) की जाँच के आधार पर दिये अपने निर्णय में स्पष्ट किया है कि **उपरोक्त तांत्रिक विधि के आरोप पूर्णतया निराधार हैं ।**

पुलिस, सी.आई.डी. (क्राइम) और एफ.एस.एल. की टीमों के द्वारा आश्रम तथा गुरुकुल की बार-बार तलाशी ली गयी, विडियोग्राफी की गयी और विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा साधकों से अनेकों बार पूछताछ की गयी परंतु उनको तांत्रिक विधि से संबंधित कोई सबूत नहीं मिला ।

न्यायमूर्ति डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग में बयानों के दौरान आश्रम पर झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगानेवाले लोगों के झूठ का भी विशेष जाँच में पर्दाफाश हो चुका है । इन्हींमें से एक है महेन्द्र चावला, जो निरस्त हो चुकीं उन्हीं बातों को फिर-फिर से दोहराता दिखता है । उसके बड़े भाई श्री तिलक चावला पूर्व में दिये गये बयान में बता चुके हैं कि ''आठवीं पास होने के बाद महेन्द्र की आदतें बिगड़ गयी थीं । एक बार वह घर से ७००० रुपये लेकर भाग गया था । उसने खुद के अपहरण का नाटक भी किया था और बाद में झूठ को स्वीकार कर लिया था । इसके बाद उसकी स्थिति ऐसी हुई कि कभी कहीं भाग रहा है, कभी घर से पैसे ले के भाग रहा है, ३-४ बार ऐसा कर चुका है ।

इसके बाद वह आश्रम में गया । हमने सोचा वहाँ जा के सँवर जायेगा, अच्छी शिक्षा लेगा, बढ़िया बात है लेकिन उसने अपना स्वभाव नहीं छोड़ा । और अब तो कुछ स्वार्थी असामाजिक तत्त्वों के बहकावे में आकर वह कुछ-का-कुछ बक रहा है । वह आश्रम, बापूजी व नारायण साँईं

जन्मदिवस पर निर्णय कर लें

जन्म-मरण के चक्कर में जाना है कि बापू के रास्ते ?

– पूज्य बापूजी

(१९ अप्रैल को श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ संत श्री आशारामजी बापू का अवतरण दिवस है । यह दिवस विश्वभर के साधकों द्वारा 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' के रूप में मनाया जाता है । इस दिन वर्षभर चलनेवाले सेवा-प्रकल्पों का नवीनीकरण होता है । आप सभीको इस दिन की ढेरों बधाइयाँ !)

१९ अप्रैल : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के अवतरण दिवस पर विशेष

मैंने कहा हुआ है कि मेरा जन्मदिवस मनाना मुझे पसंद नहीं है फिर भी तुम्हारा (साधकों का) मन नहीं मानता है तो ईश्वरप्रीति के लिए इस दिन सेवाकार्य – निष्काम कर्म करो, सत्संग सुनो-सुनाओ । तो जिन समितियों को जो भाता है सात्त्विक कर्म वे वह सेवाकार्य करती हैं ।

जन्म किसे कहते हैं ?

जिसका कभी जन्म नहीं होता वह किसी आकृति में प्रकट हुआ उसको बोलते हैं जन्म परंतु जन्म न ईश्वर का होता है न जीव का होता है ।

तो किसका जन्म होता है ? जैसे वटवृक्ष का या किसी अन्य पेड़ का बीज है अथवा गेहूँ का दाना ही समझ लो, उसे बो दिया तो बीज में से पौधा फूटा, बीज में चेतना का विकास दिखा तो हो गया उसका जन्म । ऐसे ही अंतवाहक शरीर में, दिखनेवाला शरीर प्रकट हुआ तो हो गया जन्म । यह सब व्यावहारिक सत्ता में दिखता है, वास्तव में **जो दिखता है वह टिकता नहीं है और जिससे दिखता है वह मिटता नहीं है ।** तो दिखता है चेतन (चैतन्यस्वरूप परमात्मा) की सत्ता से । तुम चेतन हो, शरीर मिथ्या है । तुम शाश्वत हो, शरीर नश्वर है । तो जो अपनी ओर आता है वह बाजी मार लेता है और जो बाहर की ओर भागता है वह अपना सर्वनाश कर लेता है । 'ऐसा बनूँ, ऐसा करूँ...' थक-थक के थकेगा, गिर-गिर के गिरेगा । थोड़ा मजा आयेगा फिर गिर-गिर के गिरेगा, जैसे पतंगे यातायात की लाइट में, दीये के प्रकाश में मजा लेने को भागे जाते हैं, परिणाम का विचार नहीं करते और फिर गिर-गिर के गिरते हैं । ऐसे ही जो परिणाम का विचार न करें और सुख पाने के लिए जल्दबाजी करें ऐसे लोगों को श्रीकृष्ण ने **'जन्तवः'** कहा । 'जंतु' शब्द द्वारा लानत बरसा दी ।

तेन मुह्यन्ति जन्तवः । वे देखने, सुनने, सूँघने, स्पर्श करने आदि के पीछे मोहित हो जाते हैं और जिससे देखा-सुना जाता है उसका उन्हें पता नहीं, ऐसे लोग जंतु हैं ।

मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः ।

(श्रीमद्भागवत माहात्म्य : १.३२)

वे मंद हैं, मंदमति हैं, भाग्यहीन हैं, उपद्रवी हैं, एक-दूसरे को लड़ाने-भिड़ानेवाले, चुगली करनेवाले, अशांति फैलानेवाले हैं परंतु जो सत्संगी हैं वे इन दोषों से शुद्ध होते-होते अपने असली स्वभाव को पाने में सक्षम हो जाते हैं । और असली स्वभाव को पाया तो बन गये संत ! जन्म-मरण

विद्यार्थी संस्कार

ध्यान से जगता है विवेक

(पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

राजकुमार सिद्धार्थ बगीचे में बैठे थे । उनका चचेरा भाई देवदत्त चंचलतापूर्वक इधर-उधर देख रहा था । सिद्धार्थ ने कहा : ''इधर-उधर क्या देखते हो ? शांत होकर बैठो, जरा ध्यान करो ।''

इधर-उधर ताकते रहनेवाला देवदत्त कहाँ पैदा हुआ और कहाँ मरा उसका कोई ठिकाना नहीं परंतु सिद्धार्थ को ध्यान करने की रीति पता थी तो वे ही युवक आगे चल के महात्मा बुद्ध होकर प्रसिद्ध हुए, कितने लोगों के मार्गदर्शक बने । उन्होंने एकाग्रता का यह परम फल पाया । चाहते तो बड़ा राज कर लेते, चाहते तो बढ़िया रथों में घूम लेते, चाहते तो ऐश-आराम व भोग-विलास करते लेकिन एकाग्रता का सदुपयोग किया – सत्य तो एक परमात्मा है, उसीको पाने में एकाग्रता का उपयोग किया तो सिद्धार्थ में से बुद्ध हो गये । उनके हृदय में बचपन से ही विवेक था ।

देवदत्त तीर-कमान लेकर पक्षियों को ताक रहा था । इतने में वहाँ से हंसों का एक टोला गुजरा । देवदत्त ने ठीक से निशाना साधकर एक हंस को गिरा दिया । वह हंस सिद्धार्थ के पास गिरा । सिद्धार्थ ने उसको प्यार से गोद में उठाया, हंस को लगा हुआ तीर धीरे से निकालकर रखा । फिर औषधीय वनस्पति के पत्तों को निचोड़-निचोड़कर उनका रस उसके घाव पर डाला और प्यार से उस पर हाथ घुमाया । भावना थी कि 'यह बेचारा जीवित रहे, स्वस्थ हो जाय ।' उस भावना ने भी काम किया ।

देवदत्त आया और बोला : ''सिद्धार्थ ! क्यों मेहनत कर रहा है ? यह हंस तो मेरा है । मेरे को दे दे ।''

सिद्धार्थ : ''यह तेरा कैसे है ? यह तो मेरा हंस है, तुझे नहीं मिलेगा ।''

''मैंने इसको तीर मारा है इसलिए यह मेरा है ।''

''तुमने तो तीर मारा है किंतु मैंने तीर निकाला है और इसके घाव पर औषधि लगाकर इसको जीवित रखा है इसलिए यह मेरा है ।''

''जिसने प्राणी का शिकार किया है वह उसीका होता है ।''

''प्राणी उसका नहीं होता जो उसे मारता है अपितु उसका होता है जो उसे सहयोग करता है ।''

''अभी तेरी खबर लेता हूँ ।'' कहकर देवदत्त सिद्धार्थ के पिता राजा शुद्धोधन के पास गया और उसकी फरियाद की । सिद्धार्थ को बुलाया गया ।

सिद्धार्थ ने कहा : ''पिताश्री ! इसने तो इस हंस को मारा लेकिन मैंने इसको बचाया । प्राणी पर जीवन देनेवाले का अधिकार होता है या जीवन लेनेवाले का ?'' एकाग्र दृष्टि से पिता की ओर देखते हुए सिद्धार्थ ने स्नेहभरी वाणी में और भी दो नीति-वचन कहे ।

शुद्धोधन का हृदय गद्गद हो गया । वे बोले :

योग से शक्ति-संचय, भोग से विनाश ! - संत पथिकजी

(अंक ३८६ के **'युवाओं हेतु आदर्श जीवन का संदेश'** का शेष)

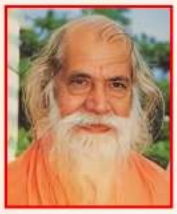

मति को निर्मल बनाना चाहते हो तो संयमी बनो और ज्ञानी महापुरुषों का संग करो, सदुपदेश सुनते रहो । भोगवृत्तियों को रोकना ही संयम है । जो असत्य से विमुख करके सत्य के सम्मुख कर दे वही सदुपदेश है । सर्वोत्तम पद की प्राप्ति चाहते हो तो सर्वत्याग★ करने पर ही प्राप्त होगा । यदि तुम त्याग न करोगे तो तुम ही त्यागे जाओगे ।

मृत्यु के दुःख से बचना चाहते हो तो प्राणांत के प्रथम ही इच्छाओं का त्याग कर दो । इच्छाओं के रहते इच्छित वस्तु नष्ट होने से ही दुःख होता है इसलिए वस्तुओं के रहते उनकी इच्छा को मिटा देना दुःखद मोहपाश से मुक्त हो जाना है ।

शाश्वत प्रीति का रस लेना है तो अपने जीवन के स्वामी को जानकर जीवन का भोग करो और नित्य मुक्ति का आनंद चाहते हो तो संसार के स्वामी को जान के अपना कुछ न मान के संसार से विरक्त हो जाओ ।

यदि कर्मयोगी होना चाहते हो तो कोई कर्म सुखभोग की आशा से न करो । योग का अर्थ अथवा लक्षण जानना चाहते हो तो यह समझ लो कि सब वृत्तियों का अभाव ही योग है । संयोग की सीमा को पार कर जाना योग है या भोग का अंत ही योग है । यदि सर्वोपरि ज्ञान चाहते हो तो आत्मज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है, और सब ज्ञान केवल अभिमान है । यदि तुम पराये दोषों को नहीं देखना चाहते हो, कारण कि यह भारी पाप है, तो अपने गुण को न देखो अथवा गुण के अभिमानी न बनो । अपने दोषों को देखो । अपना सबसे बड़ा दोष दूर हो इसके लिए यह समझ लो कि दूसरे को दोषी मानना और स्वयं अपने-आपको भूले रहना, यह सर्वोपरि दोष है । इसे दूर करो ।

यदि राग-द्वेष के बंधन से बचना चाहते हो तो जो तुम्हारे अनुकूल हैं, तुम्हारा कहना मानते हैं, उन्हें अपना प्रेमी मानकर उनका मनन न करो कारण कि वे जो कुछ करते हैं अपनी संतुष्टि के लिए करते हैं । जो तुम्हारे प्रतिकूल हैं, तुम्हारा कहना नहीं मानते हैं, उन्हें अपना द्वेषी मानकर उनसे घृणा न करो क्योंकि वे जो कुछ अशुभ करते हैं अपने ही लिए करते हैं । तुम अपने अनुकूल, प्रतिकूल दोनों से ही उदासीन रहो ।

यदि तुम अपना जप-तप नष्ट नहीं करना चाहते हो तो क्रोध आदि विकारों से अपने को बचाते रहो क्योंकि जिस प्रकार फूटे हुए घड़े में जल भरने से जल बह जाता है उसी प्रकार क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि विकारों से जप-तप क्षीण हो जाता है । यदि तुम अपनी पुण्यरूपी कमाई शीघ्र ही नष्ट कर देना चाहते हो तो मान और भोग की इच्छा को तीव्र गति से पूरी करने लगो क्योंकि जो जितना अधिक भोगा जाता है उतना ही अधिक क्षीण होता है । यदि तुम अपने प्रारब्धजनित पापों को समाप्त करना चाहते हो तो धैर्यपूर्वक अपने-आप आनेवाले कष्टों को, दुःखों को भोग डालो । ध्यान रखो ! विषयभोग से पुण्य क्षीण होते हैं और

★ यहाँ सर्वत्याग का लक्ष्यार्थ ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों की शरण में जाकर अहं का त्याग करने से है । शरीर-मन आदि को मैं मानने की नासमझी का त्याग सर्वत्याग है ।

दिव्य विभूतियों की जीवन-झाँकी

भगवान और भगवत्प्राप्त महापुरुषों का जीवनचरित्र पढ़ने-सुनने से जीवन में संयम, सदाचार, साहस, शक्ति, उत्साह, प्रसन्नता, निष्कामता, भगवत्प्रेम जैसे अनेक दैवी गुणों का विकास होता है। संसार के ताप में तपे हुए जीव पाप से पुण्य की तरफ, असत् से सत् की तरफ, अंधकार से प्रकाश की तरफ एवं नश्वर से शाश्वत की तरफ सहजता से यात्रा करने लगते हैं।

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! अवश्य पढ़ें-पढ़ायें

गर्मी के अनेक रोगों को दूर भगाये, आह्लाद व ठंडक दिलाये

गुलकंद

सूर्य एवं चन्द्र की किरणों में रखकर पुष्ट किया हुआ यह गुलकंद मधुर व शीतल है तथा मन को आह्लाद और हृदय व मस्तिष्क को ठंडक पहुँचाता है। यह अम्लपित्त (hyperacidity), आंतरिक गर्मी, प्यास की अधिकता एवं हाथ-पैर, तलवों व आँखों में जलन, घमौरियाँ, मूत्रदाह, नाक व मल-मूत्र के मार्ग से होनेवाला रक्तस्राव, अधिक मासिक स्राव जैसी पित्तजनित व्याधियों में विशेष लाभदायी है। रक्ताल्पता (anaemia), कब्ज आदि तकलीफों में भी इसका सेवन अत्यंत लाभकारी है। यह पेट के अल्सर व आँतों की सूजन को दूर करने में मदद करता है।

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

आँवला कैंडी

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है। यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है। बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है।

श्रेष्ठ रसायन

आँवला पाउडर

बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक

स्वच्छ और मजबूत दाँतों व स्वस्थ मसूड़ों के लिए

इन औषधियों से पायें अनेक लाभ :

* दाँतों और मसूड़ों के दर्द को दूर कर उन्हें बनायें मजबूत।
* दाँतों का हिलना, उनमें कीड़े लगना, छिद्र होना, मैल जमना, सड़न होना, खून निकलना आदि में लाभदायी।
* मसूड़ों में सूजन, पीब निकलना, मुँह से दुर्गंध आना, मुँह के छाले तथा जिह्वा, तालू और होंठों के सभी रोगों में लाभदायी।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st April 2025

संत रक्षा, संस्कृति रक्षा ! पूज्य बापूजी की ससम्मान रिहाई के लिए राष्ट्रव्यापी आह्वान ! विश्व महिला दिवस पर

निकालीं रैलियाँ, सौंपे ज्ञापन

पूज्य बापूजी की ससम्मान रिहाई के लिए राष्ट्रपति को सौंपा ज्ञापन

महिला उत्थान मंडल को सम्मानित करते हुए उ.प्र. के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह

अहमदाबाद

राजनांदगाँव (छ.ग.)

मुंबई-पश्चिम

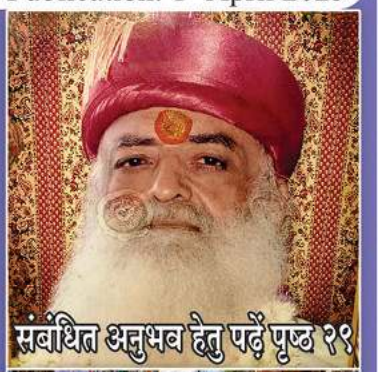
संबंधित अनुभव हेतु पढ़ें पृष्ठ २१

रायपुर

उदयपुर (राज.)

सहारनपुर (उ.प्र.)

छिंदवाड़ा (म.प्र.)

वाराणसी

कवर्धा (छ.ग.)

लखनऊ

पटना

गाजियाबाद

जमशेदपुर (झारखंड)

हैदराबाद

उज्जैन

जालंधर

चंडीगढ़

राजकोट

नाशिक

हल्दवानी (उत्तराखंड)

रेवाड़ी (हरि.)

फाजिल्का (पंजाब)

सोलन (हि.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से

अहमदाबाद आश्रम के पवित्र आध्यात्मिक वातावरण में

युवा मौन अनुष्ठान
१२ से १८ मई

राष्ट्रीय तेजस्वी युवा शिविर
१६ से १८ मई

१०वीं कक्षा से ऊपर के युवा छात्र और १६ से ४५ वर्ष के युवा भाई विशेष रूप से लाभ लें। बड़े भी आ सकते हैं।

सम्पर्क : युवा सेवा संघ मुख्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, अहमदाबाद। दूरभाष : (०७९) ६१२१०७६१/८८८, ९५१०१०५२१४

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन | लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी